15

हुआ।
नवउद्विकासवाद के
संबंध सिद्धांत में Childe ने
को दर्शाना चाहा है वह प्रारम्भ
रूप से ~~प्र~~ प्रस्तरअवस्था में
सांस्कृतिक उद्विकासवाद को
बतलाना चाहा है। Childe
कहते हैं कि मानव संस्कृति में
इस अवस्था में एक प्रमुख
परिवर्तन हुआ। मनुष्य अब
अपने वातावरण से अत्यधिक
ऊर्जा उत्पन्न करना चाहता
था जिसके लिए उसने
विश्व के तमाम पर्यावरणों
में नुकसान पहुँचाया।
Childe यहाँ पर उदा. देते हुए
बतलाते हैं कि जो समाज
जंगल में निवास करते थे अब
वे ~~स्थ~~ स्थिर जीवन के साथ
घरों में निवास करने लगे।
जो समाज, आखेट तथा
खाद्य संकलन पर निर्भर रहते
थे वे अब भोजन का
उत्पादन करने लगे (खेती केन्द्रों

धातुओं के साथ तकनीकी के विकास से
वे अपने संस्कृति का संचालन
करने में भी सफल होने लगे।
नगरों का विकास हुआ क्योंकि
तकनीक का विकास हुआ
और जिसके द्वारा शहरीकरण
की प्रक्रिया को एक नई
गति प्राप्त हुई। इसी काल
में कांस्य, पीतल तथा
लोहे जैसे धातुओं के आगमन
से भी अत्यधिक सांस्कृतिक
परिवर्तन हुए। सरल तरीके
से यदि इसे समझना चाहें
तो हम देखते हैं कि सांस्कृतिक
उद्विकास के प्रत्येक चरण
में तकनीकी का उद्विकास जुड़ी
हुई है जिसके द्वारा मनुष्य
अधिक से अधिक प्राकृति
का हनन अपने ~~आभार~~ फायदे
के लिए करने लगा।
Childe यह भी कहते हैं
कि प्रारम्भ के उद्विकासीय
चरणों में तकनीकी का ज्ञान कम
थी जिसके कारण प्रकृति का

हनन कम हुआ और उद्विकासवाद का सीमा कम नहीं। जैसे ही तकनीकी ज्ञान बढ़ा प्रकृति का हनन बढ़ा और सांस्कृतिक परिवर्तन की गति भी बदल गई। Childe के अनुसार तकनीकी ज्ञान सांस्कृतिक उद्विकासवाद के लिए बहुत अहम है।

Childe मध्य पूर्व एशिया का उदाहरण देते हैं और कहते हैं कि यदि हम क्षेत्र को देखें तो एक समय यह क्षेत्र अधिक उर्वरक क्षेत्रों में से एक था। मनुष्य के अत्यधिक प्रकृति के हनन से आज यह क्षेत्र मरुभूमि बन गया है। Childe अपने इस सिद्धांत को अपने पुरातात्विक ज्ञान से सिद्ध करते हैं। इन क्षेत्रों से जैसा कि हमने पहले ही कहा था उन्होंने अनेक पुरातात्विक वस्तुओं का संकलन

Page No. :
Date: / /

18

किया था और अभी के आधार पर उपरोक्त सिद्ध के बारे में बतलाया।
Childe के अथक प्रयास के बावजूद उनके सिद्धांत मे कुछ कमियाँ भी थी Childe ने विश्व की अन्य बहुचर्चित संस्कृतियों को जैसे की मैक्सीको तथा पेरु को नजर अन्दाज कर दिया और मात्र महत्वपूर्ण एशिया पर ही केन्द्रित रहे। आलोचक यह भी कहते है कि उद्विकासवाद और सांस्कृतिक परिवर्तन को सिद्ध करने के लिए उन्होंने जरूरत से अधिक पुरातात्विक ज्ञान का सहारा लिया। Childe भौतिक संस्कृति से सम्बंधित परिवर्तन के विषय में बात करते है किन्तु अभौतिक संस्कृति के विषय मे पुरातात्विक ज्ञान कुछ नहीं कहता। है जबकि मानवशास्त्र में भौतिक तथा

अमौलिक संस्कृतियाँ होना ही महत्वपूर्ण है। इस आधार कमियों के बावजूद V.G. Childe जैसे विद्वान थे कुछ जिन्होंने सांस्कृतिक प्रसारवाद को ब्रिटिश समुदाय में पुनः जीवित किया।